रविवार 30 अगस्त, 2026

विषय — मसीह यीशु

स्वर्ण पाठ: यूहन्ना 10: 30

"मैं और पिता एक हैं।"- मसीह यीशु

उत्तरदायी अध्ययन: यशायाह 7: 14

यशायाह 11: 2, 5

यशायाह 9: 2, 6

14 इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानूएल रखेगी।

2 और यहोवा की आत्मा, बुद्धि और समझ की आत्मा, युक्ति और पराक्रम की आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के भय की आत्मा उस पर ठहरी रहेगी।

5 उसकी कटि का फेंटा धर्म और उसकी कमर का फेंटा सच्चाई होगी॥

2 जो लोग अन्धियारे में चल रहे थे उन्होंने बड़ा उजियाला देखा; और जो लोग घोर अन्धकार से भरे हुए मृत्यु के देश में रहते थे, उन पर ज्योति चमकी।

6 क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी,

पाठ उपदेश

बाइबल

1. लूका 4: 14 (से :), 16-18, 20, 21

14 फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा,

16 और वह नासरत में आया; जहां पाला पोसा गया था; और अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन आराधनालय में जा कर पढ़ने के लिये खड़ा हुआ।

17 यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे दी गई, और उस ने पुस्तक खोलकर, वह जगह निकाली जहां यह लिखा था।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

18 कि प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिये भेजा है, कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं।
20 तब उस ने पुस्तक बन्द करके सेवक के हाथ में दे दी, और बैठ गया: और आराधनालय के सब लोगों की आंख उस पर लगी थीं।
21 तब वह उन से कहने लगा, कि आज ही यह लेख तुम्हारे साम्हने पूरा हुआ है।

2. मत्ती 9: 2-8

2 और देखो, कई लोग एक झोले के मारे हुए को खाट पर रखकर उसके पास लाए; यीशु ने उन का विश्वास देखकर, उस झोले के मारे हुए से कहा; हे पुत्र, ढाढ़स बान्ध; तेरे पाप क्षमा हुए।
3 और देखो, कई शास्त्रियों ने सोचा, कि यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है।
4 यीशु ने उन के मन की बातें मालूम करके कहा, कि तुम लोग अपने अपने मन में बुरा विचार क्यों कर रहे हो?
5 सहज क्या है, यह कहना, कि तेरे पाप क्षमा हुए; या यह कहना कि उठ और चल फिर।
6 परन्तु इसलिये कि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है (उस ने झोले के मारे हुए से कहा) उठ: अपनी खाट उठा, और अपने घर चला जा।
7 वह उठकर अपने घर चला गया।
8 लोग यह देखकर डर गए और परमेश्वर की महिमा करने लगे जिस ने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया है॥

3. मरकुस 5: 22-24 (से ;), 35 (वहाँ), 36, 38-42

22 और याईर नाम आराधनालय के सरदारों में से एक आया, और उसे देखकर, उसके पांवों पर गिरा।
23 और उस ने यह कहकर बहुत बिनती की, कि मेरी छोटी बेटी मरने पर है: तू आकर उस पर हाथ रख, कि वह चंगी होकर जीवित रहे।
24 तब यीशु उसके साथ चला॥
35 ... वह यह कह ही रहा था, कि आराधनालय के सरदार के घर से लोगों ने आकर कहा, कि तेरी बेटी तो मर गई; अब गुरू को क्यों दुख देता है?
36 जो बात वे कह रहे थे, उस को यीशु ने अनसुनी करके, आराधनालय के सरदार से कहा; मत डर; केवल विश्वास रख।
38 और अराधनालय के सरदार के घर में पहुंचकर, उस ने लोगों को बहुत रोते और चिल्लाते देखा।
39 तब उस ने भीतर जाकर उस से कहा, तुम क्यों हल्ला मचाते और रोते हो? लड़की मरी नहीं, परन्तु सो रही है।
40 वे उस की हंसी करने लगे, परन्तु उस ने सब को निकालकर लड़की के माता-पिता और अपने साथियों को लेकर, भीतर जहां लड़की पड़ी थी, गया।
41 और लड़की का हाथ पकड़कर उस से कहा, हे लड़की, मैं तुझ से कहता हूं, उठ।
42 और लड़की तुरन्त उठकर चलने फिरने लगी; क्योंकि वह बारह वर्ष की थी। और इस पर लोग बहुत चकित हो गए।

4. यूहन्ना 10: 27-29

27 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।
28 और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं, और वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।
29 मेरा पिता, जिस ने उन्हें मुझ को दिया है, सब से बड़ा है, और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता।

5. मरकुस 8: 27 (से :), 29 (से *1st* ,), 29 (किसको)-31

27 यीशु और उसके चेले कैसरिया फिलिप्पी के गावों में चले गए: और मार्ग में उस ने अपने चेलों से पूछा कि लोग मुझे क्या कहते हैं?
28 उन्होंने उत्तर दिया, कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला; पर कोई कोई एलिय्याह; और कोई कोई भविष्यद्वक्ताओं में से एक भी कहते हैं।
29 उस ने उन से पूछा; परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो पतरस ने उस को उत्तर दिया; तू मसीह है।
30 तब उस ने उन्हें चिताकर कहा, कि मेरे विषय में यह किसी से न कहना।
31 और वह उन्हें सिखाने लगा, कि मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है, कि वह बहुत दुख उठाए, और पुरिनए और महायाजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें और वह तीन दिन के बाद जी उठे।

6. मत्ती 27: 1, 2 (से *2nd* ,), 35 (से *1st* ,), 51, 52, 53 (और प्रकट हुआ), 54

1 जब भोर हुई, तो सब महायाजकों और लोगों के पुरनियों ने यीशु के मार डालने की सम्मति की।
2 और उन्होंने उसे बान्धा और ले जाकर पीलातुस हाकिम के हाथ में सौंप दिया॥
35 तब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया
51 और देखो मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया: और धरती डोल गई और चटानें तड़क गईं।
52 और कब्रें खुल गईं; और सोए हुए पवित्र लोगों की बहुत लोथें जी उठीं।
53 ... और बहुतों को दिखाई दिए।
54 तब सूबेदार और जो उसके साथ यीशु का पहरा दे रहे थे, भुईंडोल और जो कुछ हुआ था, देखकर अत्यन्त डर गए, और कहा, सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था।

7. मत्ती 28: 1-3, 5, 6 (से *1st* .), 9

1 सब्त के दिन के बाद सप्ताह के पहिले दिन पह फटते ही मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आईं।
2 और देखो एक बड़ा भुईंडोल हुआ, क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया, और उस पर बैठ गया।
3 उसका रूप बिजली का सा और उसका वस्त्र पाले की नाईं उज्ज़्वल था।
5 स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, कि तुम मत डरो: मै जानता हूँ कि तुम यीशु को जो क्रुस पर चढ़ाया गया था ढूंढ़ती हो।
6 वह यहाँ नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है।

9 और देखो, यीशु उन्हें मिला और कहा; सलाम।

8. लूका 24: 46, 48, 50-53

46 और उन से कहा, यों लिखा है; कि मसीह दु: ख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा।
48 तुम इन सब बातें के गवाह हो।
50 तब वह उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया, और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी।
51 और उन्हें आशीष देते हुए वह उन से अलग हो गया और स्वर्ग से उठा लिया गया।
52 और वे उस को दण्डवत करके बड़े आनन्द से यरूशलेम को लौट गए।
53 और लगातार मन्दिर में उपस्थित होकर परमेश्वर की स्तुति किया करते थे॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 583: 10-11

मसीह। परमेश्वर का दिव्य रूप, जो शरीर में आकर पाप को मिटाता है।

2. 315: 3-10

हमारे गुरु की यह बात, "मैं और मेरे पिता एक हैं," उन्हें रब्बियों की धार्मिक सोच से अलग करती थी। भगवान के बारे में उनकी बेहतर समझ उनके लिए एक झिड़की थी। वह सिर्फ़ एक मन के बारे में जानते थे और किसी और पर उनका कोई दावा नहीं था। वह जानते थे कि अहंकार शरीर के बजाय मन है और पदार्थ, पाप और बुराई मन नहीं हैं; और इस दिव्य विज्ञान की उनकी समझ ने उन्हें उस ज़माने की बुराइयों से भर दिया।

3. 145: 32-12

हमारे गुरु ने अपने स्टूडेंट्स को जो पहला विश्वास बताया, वह था इलाज, और उन्होंने अपने कामों से अपने विश्वास को साबित किया। पुराने ईसाई इलाज करने वाले थे। ईसाई धर्म का यह हिस्सा क्यों खो गया है? क्योंकि हमारे धर्म के सिस्टम कमोबेश हमारे दवा के सिस्टम से ही चलते हैं। पहली मूर्ति पूजा चीज़ों में विश्वास थी। स्कूलों ने भगवान में विश्वास के बजाय दवाओं में विश्वास को फैशन बना दिया है। चीज़ों पर भरोसा करके कि वे अपने झगड़े खुद खत्म कर देंगी, सेहत और तालमेल की बलि दी गई है। ऐसे सिस्टम में आध्यात्मिक शक्ति की ताकत नहीं होती, जिससे चीज़ों को साइंस का गुलाम बना दिया जाता है और धर्म ईसा मसीह जैसा बन जाता है।

4. 145: 31-32

क्रिश्चियन साइंस की थियोलॉजी में बीमारों को ठीक करना भी शामिल है।

5. 315: 11-24

लोगों के उलटे और झूठे विचारों ने मसीह और परमेश्वर के बेटे होने की उनकी समझ को छिपा दिया। वे उनके रूहानी वजूद को नहीं समझ पाए। उनके दुनियावी दिमाग इससे दुश्मनी रखते थे। उनके विचार मसीह यीशु द्वारा

बताए गए परमेश्वर के रूहानी विचार के बजाय, जानलेवा गलतियों से भरे थे। हम पाप के ज़रिए परमेश्वर की शक्ल को भूल जाते हैं, जो सच्चाई की रूहानी समझ को धुंधला कर देता है; और हमें यह शक्ल तभी महसूस होती है जब हम पाप को दबाते हैं और इंसान की विरासत, परमेश्वर के बेटों की आज़ादी को साबित करते हैं।

यीशु की रूहानी शुरुआत और समझ ने उन्हें होने की सच्चाई दिखाने में काबिल बनाया,—यह पक्का साबित करने के लिए कि कैसे रूहानी सच दुनियावी गलतियों को खत्म करता है, बीमारी को ठीक करता है, और मौत पर जीत हासिल करता है।

6. 398: 10-13

सभास्थल के सरदार की बेटी से, जिसे वे मरा हुआ कहते थे, लेकिन जिसके बारे में उसने कहा, "वह मरी नहीं है, बल्कि सो रही है," उसने बस इतना कहा, "लड़की, मैं तुझसे कहता हूँ, उठ!"

7. 410: 4-14

यीशु कहते हैं, "यह हमेशा की ज़िंदगी है, है, होगा नहीं; और फिर वह हमेशा की ज़िंदगी को अपने पिता और खुद के बारे में मौजूदा ज्ञान के तौर पर बताते हैं, प्यार, सच्चाई और ज़िंदगी का ज्ञान। "यह हमेशा की ज़िंदगी है, ताकि वे तुम्हें, एकमात्र सच्चे परमेश्वर को, और यीशु मसीह को, जिसे तुमने भेजा है, जानें।" धर्मग्रंथ कहते हैं, "इंसान सिर्फ़ रोटी से नहीं, बल्कि परमेश्वर के मुँह से निकलने वाले हर वचन से जीएगा," यह दिखाते हुए कि सच ही इंसान की असली ज़िंदगी है; लेकिन इंसान इस शिक्षा को प्रैक्टिकल बनाने पर एतराज़ करते हैं।

भगवान में हमारे विश्वास की हर परीक्षा हमें और मजबूत बनाती है।

8. 49: 14-25

अच्छाई का विनम्र प्रदर्शन करने वाला, इंसान का सबसे बड़ा शिक्षक और दोस्त, अपनी सांसारिक भाग्य का सामना अकेले परमेश्वर से करता है। वहाँ दया करने के लिए कोई इंसानी आँख नहीं थी, बचाने के लिए कोई हाथ नहीं था। उसे यह साबित करना था कि मसीह दुनियावी हालात के अधीन नहीं है, बल्कि इंसानी गुस्से की पहुँच से ऊपर है, और सच, ज़िंदगी और प्यार के ज़रिए पाप, बीमारी, मौत और कब्र पर जीत हासिल करने के काबिल है।

9. 41: 22-25

यीशु ने क्रिश्चियन साइंस को समझने से पहले ही देख लिया था कि इसका क्या असर होगा, लेकिन इस पहले से पता होने की वजह से उन्हें कोई दिक्कत नहीं हुई। उन्होंने अपना ईश्वर-मिशन पूरा किया, और फिर पिता के दाहिने हाथ बैठ गए।

10. 44: 7-10, 32-10

कब्र में उनके तीन दिन के काम ने समय पर हमेशा रहने की मुहर लगा दी। उन्होंने साबित कर दिया कि ज़िंदगी अमर है और प्यार नफ़रत का मालिक है।

रास्ते में चट्टान की पसली वाली दीवारें थीं, और गुफा के मुँह से एक बड़ा पत्थर लुढ़काना पड़ा; लेकिन जीसस ने हर भौतिक रुकावट को पार किया, पदार्थ के हर नियम को पार किया, और अपनी उदास आराम की जगह से बाहर निकले, एक शानदार सफलता, एक हमेशा रहने वाली जीत की शान के साथ।

हमारे गुरु ने मौत और कब्र पर अपनी जीत में दिव्य विज्ञान को पूरी तरह और आखिरकार दिखाया। जीसस का काम इंसानों को ज्ञान देने और पूरी दुनिया को पाप, बीमारी और मौत से बचाने के लिए था।

11. 54: 1-7

अपने इंसानी जीवन की महानता से, उन्होंने दिव्य जीवन दिखाया। अपने शुद्ध प्यार की विशालता से, उन्होंने प्यार को परिभाषित किया। सत्य की समृद्धि से, उन्होंने गलती को हराया। दुनिया ने उनकी नेकी को नहीं माना, उसे देखा नहीं; लेकिन धरती ने उनके शानदार उदाहरण से मिली सद्भाव को स्वीकार किया।

12. 315: 29-7

कुछ हद तक इंसानी रूप धारण करके (जैसा कि इंसानों को लगता था), एक इंसानी माँ से पैदा होने के कारण, जीसस आत्मा और शरीर के बीच, सच और गलती के बीच बिचौलिए थे। दिव्य विज्ञान का रास्ता समझाते और दिखाते हुए, वे उन सभी के लिए मुक्ति का रास्ता बन गए जिन्होंने उनकी बात मानी। उनसे इंसान बुराई से बचना सीख सकते हैं। असली इंसान विज्ञान के ज़रिए अपने बनाने वाले से जुड़ा हुआ है, इंसानों को बस पाप से मुड़ने और नश्वर होने को नज़रअंदाज़ करने की ज़रूरत है ताकि वे मसीह, असली इंसान और भगवान के साथ उनके रिश्ते को पा सकें, और दिव्य बेटेपन को पहचान सकें।

13. 325: 10-19

कुलुस्सियों (अध्याय 3: श्लोक 4) में पॉल लिखते हैं: "जब मसीह, जो हमारा जीवन है, प्रकट होगा [दिखाई देगा], तब तुम भी उसके साथ महिमा में प्रकट होगे [दिखाई दोगे]।" जब आध्यात्मिक अस्तित्व को उसकी पूरी पूर्णता, निरंतरता और शक्ति में समझा जाएगा, तब मनुष्य परमेश्वर की छवि में पाया जाएगा। प्रेरितों के शब्दों का पूरा मतलब यह है: तब मनुष्य उसकी समानता में, पिता के समान परिपूर्ण, जीवन में अविनाशी, "परमेश्वर में मसीह के साथ छिपा हुआ" पाया जाएगा—ईश्वरीय प्रेम में सत्य के साथ, जहाँ मानवीय समझ ने मनुष्य को नहीं देखा है।

14. 264: 28-31

जब हम क्रिश्चियन साइंस में रास्ता सीखेंगे और इंसान के आध्यात्मिक अस्तित्व को पहचानेंगे, तो हम भगवान की बनाई चीज़ों को देखेंगे और समझेंगे,—धरती, स्वर्ग और इंसान की सारी शान।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठीसुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6